कुलपति उद्‌बोधन

स्वागत व अभिनन्दन

राजस्थान विश्वविद्यालय के 78वें स्थापना दिवस पर आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री कलराज जी मिश्र, माननीय राज्यपाल राजस्थान एवं कुलाधिपति, राजस्थान विश्वविद्यालय, अति विशिष्ट अतिथि डॉ. प्रेमचंद बैरवा, माननीय उपमुख्यमंत्री एवं मंत्री उच्च शिक्षा, राजस्थान सरकार, विशिष्ट अतिथि श्री रामचरण बोहरा, माननीय सांसद लोकसभा, जयपुर एवं श्री कालीचरण जी सराफ, माननीय विधायक मालवीय नगर, सभी पधारे अतिथिगण, शिक्षक एवं कर्मचारीगण, विद्यार्थीगण, प्रेस प्रतिनिधिगण।

मैं, राजस्थान विश्वविद्यालय के भव्य प्रांगण में आपकी गरिमामय उपस्थिति में स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ, इस शुभ अवसर पर आप सभी का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन।

मैं सर्वप्रथम राजस्थान के माननीय राज्यपाल एवं हमारे कुलाधिपति श्री कलराज जी मिश्र का स्वागत करती हूँ जिनके संरक्षण में यह आयोजन सम्पन्न हो रहा है। कुलाधिपति महोदय का जीवन 'समावेशी दर्शन' को समर्पित है। आप नारी सशक्तिकरण के लिये प्रतिबद्ध रहे हैं। आपके निर्णयों के फलस्वरूप ही आज राजस्थान के 4 विश्वविद्यालयों में कुलपति पद का दायित्व महिला शिक्षकों के पास है।

राजस्थान सरकार में माननीय उपमुख्यमंत्री एवं इस विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र माननीय डॉ0 प्रेमचन्द बैरवा जी हमारे मध्य उपस्थित हैं। माननीय की गरिमामय उपस्थिति से हम अत्यन्त ही प्रफुल्लित एवं उत्साहित हैं। हम आपका ह्रदय के अन्तः स्थल से स्वागत करते हैं।

हमारे क्षेत्र के लोकप्रिय, सहज उपलब्ध एवं सरल स्वभाव के धनी सांसद श्री रामचरण जी बोहरा का विश्वविद्यालय प्रांगण में स्वागत है।

हमारा सौभाग्य है कि 1971–72 में कॉमर्स कॉलेज में छात्रसंघ महासचिव, 1972–73 में राजस्थान विश्वविद्यालय छात्रसंघ उपाध्यक्ष एवं 1974–75 में अध्यक्ष रहे माननीय कालीचरण जी सराफ, विधायक एवं पूर्व मंत्री उच्च शिक्षा राजस्थान सरकार इस समारोह को गरिमा प्रदान कर रहे हैं। इस विश्वविद्यालय में लगभग दो दशकों से अस्थायी नियुक्ति की पीड़ा सहन करते रहे शिक्षकों का स्थायी आमेलन वर्ष 2008 में आप द्वारा बतौर उच्च शिक्षा मंत्री राजस्थान सरकार किया गया है। हम आपका स्वागत एवं अभिनन्दन करते हैं।

साथ ही इस आयोजन में पधारे पूर्व कुलपति महोदय, सिण्डीकेट सदस्य, सीनेट सदस्य, संकाय अधिष्ठाता गण, महाविद्यालयों के प्राचार्य गण, विभागाघ्यक्ष महोदय, शिक्षक गण, अधिकारी एवं कर्मचारी गण तथा उपस्थित विद्यार्थियों का स्वागत करती हूँ। सभागार में उपस्थित प्रेस प्रतिनिधियों का भी स्वागत करती हूँ।

मेरे लिये ये गौरवमय एवं भावुक कर देने वाले क्षण हैं कि इसी विश्वविद्यालय में शिक्षक पद पर कार्यरत रहते हुये इस विश्वविद्यालय का शैक्षणिक नेतृत्व करने का अवसर मुझे मिला है।

गौरवमय यात्रा

दिसम्बर 1946 में तत्कालीन राजपूताना प्रोविंस के शासकों में 'राजपूताना विश्वविद्यालय' की जयपुर में स्थापना पर सहमति बनी। इसी के फलस्वरूप 8 जनवरी 1947 को ''राजपूताना विशविद्यालय अधिनियम 1946'' अधिसूचित कर विश्वविद्यालय को अस्तित्व में लाया गया।

जयपुर राज घराने के 'केसर गढ़' को विश्वविद्यालय का प्रारम्भिक परिसर बनाया गया। वर्तमान मुख्य परिसर में इसकी नींव 20 फरवरी, 1949 को तत्कालीन गवर्नर जनरल श्री सी. राजगोपालाचारी द्वारा रखी गयी।

वर्ष 1956 में वर्तमान 'राजस्थान राज्य' के अस्तित्व में आ जाने पर राजपूताना विश्वविद्यालय का नाम ''राजस्थान विश्वविद्यालय'' कर दिया गया।

विश्वविद्यालय का सौभाग्य रहा है कि महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, महामहिम सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन, माननीय पण्डित जवाहर लाल नेहरू, शान्तिदूत मदर टेरेसा, डॉ0 मनमोहन सिंह एवं महामहिम

श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने विश्वविद्यालय परिसर में अपनी गरिमामय उपस्थिति एवं प्रेरणादायक उद्‌बोधनों से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को प्रेरित किया।

1950 एवं 1960 के दो दशकों में देश व विदेश के ख्यातिनाम शिक्षकों को इस विश्वविद्यालय में अकादमिक नेतृत्व प्रदान करने के लिये आग्रहपूर्वक नियुक्त किया गया। इन शिक्षकों में प्रोफेसर जी. सी. पाण्डेय, प्रोफेसर राजकृष्णा, प्रोफेसर राजा चलिया, प्रोफेसर पी. एन. श्रीवास्तव, प्रोफेसर सतीश चन्द्र, प्रोफेसर आर.सी. मेहरोत्रा, प्रोफेसर एम.वी. माथुर, प्रोफेसर दया कृष्ण, प्रोफेसर ए.जी. स्टोक एवं प्रोफेसर इकबाल नारायण प्रमुख हैं।

1970 के दशक में यह विश्वविद्यालय भारतीय सिविल सेवा के अधिकारी देने वाले अग्रणी विश्वविद्यालयों में सम्मिलित हो गया। इनमें अन्य के अलावा डॉ. आदर्श किशोर सक्सेना, श्री अरविंद मायाराम, श्री डी.बी. गुप्ता प्रमुख हैं। हमारे पूर्व छात्र रहे श्री अमिताभ गुप्ता, श्री गोपाल शर्मा एवं श्री हरीश चन्द मीणा विभिन्न राज्यों में पुलिस महानिदेशक रहे हैं।

यहाँ के पूर्व छात्र श्री भैंरो सिंह शेखावत, श्री जगदीप धनखड़, श्री नमोनारायण मीणा एवं श्री कैलाश मेघवाल ने भारतीय राजनीतिक क्षितिज पर अपनी उपस्थिति प्रमुखता से दर्ज की है। हमें गर्व है कि राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा एवं उपमुख्यमंत्री श्री प्रेमचन्द बैरवा सहित अनेक मंत्रीगण, सांसद एवं विधायक इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थी रहे हैं।

हमें गर्व है कि सोलहवें वित्त आयोग के अध्यक्ष प्रोफेसर अरविंद पानगडिया, माननीय सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति अजय रस्तोगी, विख्यात धावक गोपाल सैनी, प्रसिद्ध पर्वतारोही संतोष यादव, तीरंदाज अवनी लेखरा, अभिनेता गोवर्धन असरानी इस विश्वविद्यालय परिवार से ही हैं।

मान्यवर, विश्वविद्यालय की अकादमिक गतिविधियों का केन्द्र **विद्यार्थी** है। इनके मार्गदर्शन एवं निर्माण के लिये ही शिक्षक व कर्मचारीगण हैं। इतिहास साक्षी है कि छिपी प्रतिभाओं को खोजने, सही दिशा एवं मार्गदर्शन करने, गढ़ने, तराशने एवं संवारने का कार्य केवल एवं

केवल **'गुरु'** ही कर सकता है। शिक्षक का स्थान प्रौद्योगिकी नहीं ले सकती।

वर्तमान में विश्वविद्यालय में 37 स्नातकोत्तर विभाग, 19 शोध केन्द्र, 7 संघटक महाविद्यालयों में लगभग 28000 विद्यार्थी एवं शोधार्थी हैं।

आज छात्रों की संख्या बढ़ गयी है लेकिन 58 प्रोफेसर, 114 एसोसिएट प्रोफेसर एवं 336 असिस्टेंट प्रोफेसर के पद रिक्त हैं। इससे शिक्षक – छात्र अनुपात गड़बड़ा गया है। ये ही हालात अशैक्षणिक पदों के क्रम में हैं। आज विश्वविद्यालय का वार्षिक बजट 400 करोड़ रुपये है जिसमें राज्य सरकार से प्राप्त अनुदान मात्र 132 करोड़ रुपये है। विश्वविद्यालय की स्वायत्तता में आयी कमी एवं कतिपय कारणों से इसकी शैक्षणिक गुणवत्ता में कुछ दुर्बलता आयी है। किन्तु अनेक कठिनाइयों व चुनौतियों के बावजूद शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों की मेहनत से विश्वविद्यालय कीर्तिमान स्थापित करता रहा है।

1. यू.जी.सी. की ओर से ''University with Potentials for Excellence'' के तहत राष्ट्रीय स्तर पर कुल 8

विश्वविद्यालयों का चयन किया गया था जिनमें यह विश्वविद्यालय शामिल रहा है।

2. **नेशनल असेस्मेंट एण्ड एक्रिडिटेशन कौंसिल (NAAC)** द्वारा किये गये मूल्यांकन में वर्ष 2004 में हमारा विश्वविद्यालय **'ए प्लस'** ग्रेड प्राप्त करने में सफल रहा है। वर्तमान में इसे **'ए'** ग्रेड प्राप्त है।
3. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर **कॉलेबोरेटिव शोध प्रकाशनों** की उपलब्धियों के मध्य नजर वर्ष 2012 में इण्डियन साईंस कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में **तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह के उद्‌बोधन** में इस विश्वविद्यालय के योगदान को रेखांकित किया गया था।

बदलता वैश्विक परिदृश्य : अवसर एवं चुनौतियाँ

आज द्रुतगति से बदल रहा वैश्विक परिवेश हमें **विकास** के अनेक अवसर प्रदान कर रहा है। हमें इन अवसरों का उपयोग करना है। इसके साथ ही प्रबल चुनौतियाँ भी खड़ी हो रही हैं। इस सन्दर्भ में मुझे महाकवि गोपाल दास नीरज की ये सीख याद आ रही है:

"क्यों न कितनी बड़ी हो
क्यों न कितनी कठिन हो
हर नदी की राह से चट्टान को हटना पड़ा है"

मेरा विश्वविद्यालय परिवार विपुल सामर्थ्य, प्रबल ऊर्जा एवं इच्छा शक्ति का धनी है। हम चुनौतियों को विकास के अवसर में बदलने के लिये मेहनत करेंगे।

प्रतिबद्धतायें

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020'' लागू की जा रही है। इस शिक्षा नीति के आधारभूत स्तम्भ हैं –

1. Accessibility
2. Quality
3. Affordability
4. Accountability एवं
5. Academic Flexibility.

ये शिक्षा नीति Sustainable Development Agenda से ओतप्रोत है। इसके माध्यम से **"विकसित भारत"** का संकल्प फलीभूत किया जाना है।

इस शिक्षा नीति के उद्देश्यों को मूर्तरूप देना विश्वविद्यालय की प्राथमिकता है:

1. इसके तहत हम 'एकेडेमिक बैंक ऑफ क्रेडिट' प्रणाली अपना चुके हैं।
2. हम नवीन केन्द्रीय पुस्तकालय भवन में ई–लाइब्रेरी की सुविधा उपलब्ध करवाने के लिये प्रतिबद्ध हैं।
3. हम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा जारी शैक्षणिक एवं शोध नवाचारों को अनवरत अंगीकार कर रहे हैं।
4. शोध से जुड़ी सुविधाओं एवं नवाचारों का लाभ अधिकतम शोधार्थियों को उपलब्ध कराने वाले 'Research Portal' का कार्य प्रगति पर है।
5. विद्यार्थियों की परिवेदनाओं के निस्तारण के लिये विश्वविद्यालय में ''लोकपाल'' की नियुक्ति की जा चुकी है।

6. विश्वविद्यालय का नेक द्वारा नये सिरे से मूल्यांकन करवाया जाना हमारी प्राथमिकता पर है।
7. अब तक विश्वविद्यालय मुख्य परिसर की केवल 202 एकड़ भूमि का नामान्तरण हो पाया है। शेष 162 एकड़ भूमि का नामान्तरण विश्वविद्यालय के पक्ष में करवाना मेरी प्राथमिकता पर रहेगा।

हमें माननीय कुलाधिपति जी का संरक्षण एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है। माननीय क्षेत्रीय विधायक जी, माननीय उपमुख्य मंत्री जी, माननीय मुख्यमंत्री जी इसी परिवार से हैं।

मैं ऐसी अनुकूल परिस्थितियों में दीर्घकाल से रिक्त चले आ रहे शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक पदों पर भर्ती एवं कार्यरत शिक्षकों तथा कर्मचारियों की लम्बित पदोन्नतियों हेतु कृतसंकल्प हूँ।

मान्यवर, हम विश्वविद्यालय में पारदर्शी, उत्तरदायी, संवेदनशील एवं विधि अनुरूप प्रशासन एवं बदलते परिवेश में अवरोधक बन रहे कानूनी प्रावधानों में संशोधन एवं परिष्कार का प्रयास करेंगे।

मान्यवर, **''धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा'** इस विश्वविद्यालय का ध्येय वाक्य (Motto) है। हमें अनुशासित रहकर कर्त्तव्य निर्वहन करना है। महाकवि जयशंकर प्रसाद ने लिखा है कि **'महत्वाकांक्षा का मोती' निष्ठुरता की सीपी में ही पलता है।**

मान्यवर, आज आपने दीप प्रज्वलन किया है। ये हमें आलोक प्रदान करता रहेगा। साथ ही हमें गौतम बुद्ध का संदेश याद रखना होगा–

''अप दीपो भवः'' यानी प्रकाश स्तम्भ स्वंय को ही होना पड़ेगा।

अंत में मैं पुनः आप सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। आप सब को 78 वें स्थापना दिवस पर बधाई देती हूँ।

जय भारत, जय राजस्थान, जय राजस्थान विश्वविद्यालय।